ग़ज़ल

ग़ज़ल को काव्य के सभी प्रकार में उच्च स्थान पर रखा जा सकता है। कहते हैं कि ग़ज़ल तो महफ़िल की जान है। किसी एक निश्चित छंद (बहर) में एक जैसे रदीफ़ और काफ़िये वाले शेरों के समुह की रचना से एक ग़ज़ल की रचना होती है। एक ही ग़ज़ल के अलग-अलग शेर में अलग-अलग विषयों को पसंद किया जा सकता है। एक ही ग़ज़ल के अलग-अलग शेर का अपना अलग अस्तित्व होता है और हरेक शेर अपने आप में संपूर्ण होता है। एक ही ग़ज़ल के दो शेर एक-दूसरे से संबंधित नहीं होते। एक-दूसरे से संबंधित दो पंक्तियों (मिसरों) को मिला कर एक शेर बनता है कि जिसकी पहली पंक्ति को उला मिसरा और दूसरी पंक्ति को सानी मिसरा कहते हैं। एक ग़ज़ल में कम से कम पांच और ज़ियादा से ज़ियादा ग्यारह शेर होने चाहिए, मगर ग्यारह से ज़ियादा शेरों की ग़ज़लें भी पाई जाती हैं।

ग़ज़ल का पहला शेर कि जिसकी दोनों पंक्तियों में रदीफ़ (अनुप्रास) और काफ़िये (प्रास) का प्रयोग हुआ हो, उसे ग़ज़ल का मतला कहते हैं। एक ही ग़ज़ल में एक से ज़ियादा मतले कहे जा सकते हैं। मतला के अलावा बाक़ी के शेरों में सिर्फ़ दूसरी पंक्ति में ही रदीफ़ और काफ़िये को निभाना ज़रूरी है। ग़ज़ल के हरेक शेर की दूसरी पंक्ति के अंत में (मतले की दोनों पंक्ति के अंत में) रदीफ़ का प्रयोग होता है और रदीफ़ से पहले काफ़िये का प्रयोग किया जाता है। ग़ज़ल का अंतिम शेर कि जिसमें शायर ने अपने नाम या उपनाम (तख़ल्लुस) का प्रयोग किया हो, उसे ग़ज़ल का मक़ता कहते हैं। ग़ज़ल के अंतिम शेर में शायर ने अपने नाम या उपनाम का प्रयोग न किया हो तो उसे ग़ज़ल का मक़ता न कहते हुए ग़ज़ल का अंतिम शेर ही कहना चाहिए। यहां पर शायर रामप्रकाश गोयल की एक ग़ज़ल प्रस्तुत है।

सब्र हम से ज़रा नहीं होता
उनका वादा वफ़ा नहीं होता

प्यार जज़्बा है और जज़्बे का
यार कोई सिला नहीं होता

मरने जीने पे इख़्तियार नहीं
कोई इन्सां ख़ुदा नहीं होता

उसकी रहमत के इतने है एहसां
क़र्ज़ जिनका अदा नहीं होता

फ़ासिले फिर भी दिल में रहते हैं
जब कोई फ़ासिला नहीं होता

यूं मेरे दिल में बस गया है वो
अब नज़र से जुदा नहीं होता

मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं
जिस तरफ़ रासता नहीं होता

उपरोक्त ग़ज़ल के रदीफ़ और काफ़िये इस प्रकार हैं।
रदीफ़ : नहीं होता। (जो हरेक शेर के अंत में सामान्य है।)
काफ़िये : ज़रा, वफ़ा, सिला, ख़ुदा, अदा, फ़ासिला, जुदा, रासता। (जो हरेक शेर में रदीफ़ से पहले आते हैं और सब के उच्चार का अंत एक जैसा है।)

उपरोक्त ग़ज़ल का पहला शेर कि जिसमें दोनों पंक्ति में रदीफ़ और काफ़िये का प्रयोग हुआ है वो ग़ज़ल का मतला कहलाएगा तथा ग़ज़ल का अंतिम शेर कि जिसमें शायर ने अपने नाम या उपनाम का प्रयोग नहीं किया है वो ग़ज़ल का मक़ता न कहलाते हुए ग़ज़ल का अंतिम शेर ही कहलाएगा।

ग़ज़ल की रचना में रदीफ़ अनिवार्य नहीं है मगर काफ़िये अनिवार्य है। काफ़िये के बिना ग़ज़ल नहीं बन सकती। बिना रदीफ़ की ग़ज़ल में मतले की दोनों पंक्ति के अंत में और बाक़ी के शेरों की दूसरी पंक्ति के अंत में काफ़िये का प्रयोग होता है। यहां पर शायर ‘अरशद’ मीनानगरी की एक ग़ज़ल प्रस्तुत है कि जिसमें रदीफ़ का प्रयोग हुआ नहीं है।

ये ख़ुशरंग चेहरा शगुफ़्ता कंवल
महकता सरापा मुरस्सा ग़ज़ल

मुहब्बत का पैकर सुलूक-ए-शजर
कि पत्थर के बदले में देता है फल

अगर सरफ़राज़ी की है आरज़ू
तो पहले तू अपनी अना से निकल

जो है आज का काम कर आज ही
मिलेगा नहीं तुझको ये आज कल

मुझे रोक लेना तो मुमकिन नहीं
अगर ज़र्फ़ है मुझसे आगे निकल

अंधेरे तो 'अरशद' फ़रेबी नहीं
मगर इस नयी रोशनी में संभल

उपरोक्त ग़ज़ल के काफ़िये इस प्रकार हैं।
काफ़िये : कंवल, ग़ज़ल, फल, निकल, कल, संभल।

उपरोक्त ग़ज़ल का पहला शेर मतला कहलाएगा क्योंकि उसकी दोनों पंक्ति में काफ़िये का प्रयोग हुआ है और अंतिम शेर मक़ता कहलाएगा क्योंकि उसमें शायर ने अपने तख़ल्लुस (नाम या उपनाम) का प्रयोग किया है।

किसी भी रचना के किसी भी बंद में दो से ज़ियादा या कम पंक्ति का प्रयोग हुआ हो तो वह रचना ग़ज़ल नहीं है, क्योंकि ग़ज़ल का हरेक बंद (शेर) दो ही पंक्ति का होता है। जिस रचना के सभी बंद दो ही पंक्ति के हो उस रचना के सभी बंद अपने आप में सम्पूर्ण हो और एक-दूसरे से रदीफ़-काफ़िया से जुड़े हुए हो तो वह रचना ग़ज़ल है अन्यथा वह रचना भी गीत ही है। साथ में इस बात का भी ध्यान रहे कि ग़ज़ल के हरेक बंद (शेर) की हरेक पंक्ति में एक ही छंद प्रयुक्त होता है जबकि पूरे गीत में एक से ज़ियादा छंदों का प्रयोग किया जा सकता है।

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि

(हरेक संधि के पद्‌यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है।)

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	लगागा	पंचकल	१+२+२=५
०२	गालगा	पंचकल	२+१+२=५
०३	लगालगा या लगालगा	षट्कल	१+२+१+२=६
०४	ललगागा	षट्कल	१+१+२+२=६
०५	गाललगा	षट्कल	२+१+१+२=६
०६	लगागागा	सप्तकल	१+२+२+२=७
०७	गालगागा	सप्तकल	२+१+२+२=७
०८	गागालगा	सप्तकल	२+२+१+२=७
०९	ललगालगा	सप्तकल	१+१+२+१+२=७
१०	लगाललगा	सप्तकल	१+२+१+१+२=७
११	गागागागा या गागागागा	अष्टकल	२+२+२+२=८
१२	लगालगागा	अष्टकल	१+२+१+२+२=८
१३	ललगागागा	अष्टकल	१+१+२+२+२=८
१४	गाललगागा	अष्टकल	२+१+१+२+२=८
१५	गागाललगा या गागाललगा	अष्टकल	२+२+१+१+२=८
१६	ललगाललगा	अष्टकल	१+१+२+१+१+२=८
१७	गालगालगा	अष्टकल	२+१+२+१+२=८

उपरोक्त सूचि में संधि क्रमांक १ से १७ में से संधि क्रमांक १ से १२ को मुख्य संधि समझना चाहिए कि जिसके आवर्तित स्वरूप की रचना पाई जाती है तथा संधि क्रमांक १३ से १७ को गौण संधि समझना चाहिए कि जिसका प्रयोग ज़ियादातर गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ही होता है। उपरोक्त सूचि में सभी संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही है और किसी भी संधि में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं हुए है। एकसाथ दो से अधिक लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है। ताल झपताल (१० मात्रा), ताल दादरा (६ मात्रा), ताल रूपक (७ मात्रा) और ताल कहरवा (८ मात्रा) के आधार से अनुक्रम से पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की सभी संधि का पद्‌यभार निश्चित किया जा सकता है।

ग़ज़ल के प्रचलित छंद

(हरेक छंद में पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित किया गया है।)

०१	लगागा लगागा लगागा लगागा तर्क-संगत नाम : ४लगागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित ये महलों ये तख़्तों ये ताजों की दुनिया
०२	लगागा लगागा लगागा लगा तर्क-संगत नाम : ४लगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित न जी भरके देखा न कुछ बात की
०३	लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा तर्क-संगत नाम : ८लगागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित ये सोने की दुनिया ये चांदी की दुनिया यहां आदमी की भला बात क्या है
०४	गालगा गालगा गालगा गालगा तर्क-संगत नाम : ४गालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित आप को देख कर देखता रह गया
०५	गालगा गालगा गालगा गा तर्क-संगत नाम : ४गालगा-लगा प्रकार : शुद्ध-खंडित कैसा जादू बलम तूने डारा
०६	गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा तर्क-संगत नाम : ८गालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए

०७	लगालगा लगालगा लगालगा लगालगा तर्क-संगत नाम : ४लगालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित फ़ज़ां भी है जवां जवां हवा भी है रवां रवां
०८	गालगा लगालगा गालगा लगालगा तर्क-संगत नाम : २(-ल+२लगालगा) प्रकार : शुद्ध-खंडित फ़ासिला तो है मगर कोई फ़ासिला नहीं
०९	गागा ललगागा ललगागा ललगागा तर्क-संगत नाम : -लल+४ललगागा प्रकार : शुद्ध-खंडित बीते हुए लम्हों की कसक साथ तो होगी
१०	लगागागा लगागागा लगागागा लगागागा तर्क-संगत नाम : ४लगागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित तेरी दुनिया में जीने से तो बेहतर है कि मर जाएं
११	लगागागा लगागागा लगागा तर्क-संगत नाम : ३लगागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित कहीं ऐसा न हो दामन जला लो
१२	गालगागा गालगागा गालगागा गालगा तर्क-संगत नाम : ४गालगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित होशवालों को ख़बर क्या बेख़ुदी क्या चीज़ है
१३	गालगागा गालगागा गालगा तर्क-संगत नाम : ३गालगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित दिल के अरमां आंसूओं में बह गए

१४	गालगागा गालगा गालगागा गालगा तर्क-संगत नाम : २(२गालगागा-गा) प्रकार : शुद्ध-खंडित खो गया जाने कहां आरज़ूओं का जहां
१५	गागालगा गागालगा गागालगा गागालगा तर्क-संगत नाम : ४गागालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहां कोई न हो
१६	ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा तर्क-संगत नाम : ४ललगालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित मुझे दर्द-ए-दिल का पता न था मुझे आप किस लिए मिल गए
१७	लगालगागा लगालगागा लगालगागा लगालगागा तर्क-संगत नाम : ४लगालगागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित नसीब में जिसके जो लिखा था वो तेरी मेहफ़िल में काम आया
१८	गागागागा गागागागा गागागागा गागागागा तर्क-संगत नाम : ४गागागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित जिस दिल में बसा था प्यार तेरा उस दिल को कभी का तोड़ दिया
१९	गागागागा गागागागा गागागागा गागागा तर्क-संगत नाम : ४गागागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित चांदी की दीवार न तोड़ी प्यार भरा दिल तोड़ दिया
२०	गागागागा गागागागा तर्क-संगत नाम : २गागागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित दैर-ओ-हरम में बसनेवालो

२१	गागागागा गागागा तर्क-संगत नाम : २गागागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित सब की बातें सुनता हूं
२२	गागागागा गागा गागागागा गागा तर्क-संगत नाम : २(२गागागागा-गागा) प्रकार : शुद्ध-खंडित होटों से छू लो तुम मेरा गीत अमर कर दो
२३	गागालगा लगागा गागालगा लगागा तर्क-संगत नाम : २(गागालगा+लगागा) प्रकार : मिश्र-अखंडित ऐ दिल मुझे बता दे तू किस पे आ गया है
२४	ललगालगा लगागा ललगालगा लगागा तर्क-संगत नाम : २(ललगालगा+लगागा) प्रकार : मिश्र-अखंडित जो गुज़र रही है मुझ पर उसे कैसे मैं बताऊं
२५	गाललगा लगालगा गाललगा लगालगा तर्क-संगत नाम : २(गाललगा+लगालगा) प्रकार : मिश्र-अखंडित जब से चले गए हैं वो ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं
२६	गागा लगालगा ललगागा लगालगा तर्क-संगत नाम : -लल+२(ललगागा+लगालगा) प्रकार : मिश्र-खंडित उनके ख़याल आए तो आते चले गए
२७	लगालगा ललगागा लगालगा गागा तर्क-संगत नाम : २(लगालगा+ललगागा)-गा प्रकार : मिश्र-खंडित कभी किसीको मुक़म्मल जहां नहीं मिलता

२८	गालगागा ललगागा ललगागा गागा तर्क-संगत नाम : ल+४ललगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित आपको प्यार छुपाने की बुरी आदत है
२९	गालगागा ललगागा गागा तर्क-संगत नाम : ल+३ललगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित अहल-ए-दिल यूं भी निभा लेते हैं
३०	गालगागा लगालगा गागा तर्क-संगत नाम : ल+ललगागा+लगालगा+ललगागा-गा प्रकार : मिश्र-खंडित तुमको देखा तो ये ख़याल आया

छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि ललगागा प्रयुक्त होती है और उस अंतिम संधि ललगागा के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से अंतिम संधि ललगा प्राप्त होती है कि जिसमें दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का या एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट होने के कारन उन सभी छंदों में अंतिम संधि ललगा के बजाय गागा को ही दर्शाया है। इस तरह छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि ललगा और गागा दोनों ही रूप में स्वीकार्य है।

छंद क्रमांक २८, २९ और ३० में पहली संधि गालगागा प्रयुक्त होती है कि जिसका पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालगागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गालगागा) पर स्थित है। ललगागा संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से लललगागा संधि प्राप्त होती है। ग़ज़ल के छंदों में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं होते। इस आधार पर लललगागा संधि के दूसरे और तीसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर लगागागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका समावेश ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि में हमने किया हुआ है, मगर लललगागा संधि के पहले और दूसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर गालगागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालगागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गालगागा) पर स्थित है। गालगागा संधि कि जिसका पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर स्थित है उसका प्रयोग षट्कल संधि ललगागा और लगालगा के साथ मिश्र रूप के जितना ही मर्यादित रहेगा। षट्कल संधि ललगागा और लगालगा का पद्यभार भी संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर ही स्थित है। छंद

क्रमांक २८, २९ और ३० में कभी-कभी पहली संधि गालगा<u>गा</u> के स्थान पर लगागा<u>गा</u> भी प्रयुक्त होती दिखाई देती है।

लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर छंद क्रमांक २५ के अलावा सभी अखंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में पद्यभार समान मात्रा के अंतर पर स्थित है और सभी खंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में सिर्फ़ लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षरों की मात्रा के जितनी ही विषमता रहती है जो स्वीकार्य है। छंद क्रमांक २५ में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता रहती है और इसीलिए उसमें पद्यभार अनुक्रम से ७ और ५ मात्रा के अंतर पर स्थित है। जिस छंद में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता जितनी ज़ियादा रहेगी उस छंद की प्रवाहिता और गेय-तत्व उतने ही कम होंगे और उस छंद के प्रचलित होने की संभावना भी उतनी ही कम हो जाएगी।

‘ग़ज़लधारा’ की e-book (pdf file)

आप मेरी website : www.udayshahghazal.com से download करके निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।